ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 50 • Vol. 200 • Issue : Oct-Dec, 2023

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341306, Rajasthan, India

Editorial and Advisory Board

Padma Shri Dr. Kumarpal Desai
Professor Emeritus, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun
Managing Trustee, Institute of Jainology (India),
Managing Trustee, Gujarat Encyclopedia Trust (Ahmedabad)

Prof. R.S. Yadav
Vice-Chancellor
Baba Mastnath University, Asthal Bohar
Rohtak, Haryana

Prof. M.R. Gelra
Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich
Former Vice Chancellor
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota, Rajasthan

Prof. Dayanand Bhargava
Emeritus Professor, JVBI, Ladnun
Former Chairman, Veda-Vijnana,
J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Prof. Jitendra B. Shah
Founder & Pioneer Trustee, Shru Ratnakar,
Former Director, L.D. Institute of Indology, Ahmedabad

Prof. S.R. Vyas
Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur
Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, New Delhi

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 50 **Vol : 200** **Issue : Oct-Dec, 2023**

Patron

Prof. Bachhraj Dugar

Vice-Chancellor

Editors

Prof. Damodar Shastri

Prof. Nalin K. Shastree

Guest Editor

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor

Mohan Siyol

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute

Ladnun - 341306 (Raj.) India

Contact us: **tulsiprajnarj@gmail.com**

+91-9887111345

CONTENTS

Āgama
Ācārya Mahāprajña 01

Articles

Jaina Mysticism and the Mystic Way 10
Dr Kamal Chand Sogani

Health Care Measures for Diseas Preventio in Naturopathy 21
Rajiv Rastogi
Surendra Kumar
Udham Singh

Tantra : The Living Tradition of Mithila 31
Dr Bindu Chauhan

Jainism and Sartrean Existentialism : A Comparative Study on the Concept of Being and Existence 39
Md Zizaur Rahaman
Mostafijur Rahaman

Color-Myth: Indian Mythological Colors and Semiotic Deconstruction of Color Signs in Indian Mythological Cartoon Movie *Little Krishna* 48
Shubhajit Chowdhury

जैन दर्शन में वादविद्या एवं वादविधि 63
डॉ धर्मचन्द जैन

जैन परंपरा में स्तूप-एक विमर्श 74
अभिषेक कुमार जैन

प्राकृत अव्ययों का साहित्यिक प्रयोग 80
डॉ श्वेता जैन

सुनीतिशतकम् की शब्द-संयोजना एवं भाषा 88
डॉ आशीष कुमार

पुद्गल द्रव्य की विशिष्ट पर्यायें और उनके वैज्ञानिक प्रयोग 100
डॉ समता जैन

जैन परंपरा में स्तूप : एक विमर्श

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

अभिषेक कुमार जैन*

भारतीय स्थापत्य कला में स्तूपों का विशेष स्थान है। इन स्तूपों का संबंध विशेष रूप से बौद्ध धर्म से माना जाता है। पूर्व में बिहार से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान और उत्तर में मध्यप्रदेश से लेकर दक्षिण में आंध्र प्रदेश तक प्राचीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष प्राप्त होते हैं। किंतु उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में मथुरा के कंकाली टीले के के उत्खनन से प्राप्त जैन स्तूप एवं अन्य पुरातात्त्विक सामग्री ने स्तूपों के संबंध में चली आ रही इस पुरानी मान्यता से आगे बढ़कर सोचने को विवश किया।

जब भी जैन स्तूपों के बारे में चर्चा होती है तो जिज्ञासु जन-सामान्य के मन में कुछ इस प्रकार के प्रश्न उठ ने संभावित हैं– भारत में स्तूपों के निर्माण की परंपरा कब से प्रचलित है? जैन धर्म में स्तूपों की मान्यता कितनी प्राचीन है? जैन स्तूपों का स्वरूप कैसा था? जैनस्तूपों की संख्या कितनी थी? जैन स्तूप बौद्ध स्तूपों से किस प्रकार भिन्न थे ? मथुरा के अतिरिक्त क्या अन्य स्थानों पर भी जैन स्तूपों का निर्माण हुआ? परवर्ती शताब्दियों में जैन स्तूपों की क्या स्थिति रही? इत्यादि। प्रकृत लेख में इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है।

जब हम भारत में स्तूप निर्माण की प्राचीन परंपरा पर विचार करते हैं, तो हमें ज्ञात होता है कि बुद्ध के आविर्भाव से कई शताब्दियों पूर्व से ही भारत में स्तूपों से मिलते-जुलते निर्माण होते रहे हैं। भारत में वैदिक काल से ही अंतिम संस्कार के रूप में शवों को जलाने और भूमि में गाड़ने की परंपराएँ प्रचलित हैं। इन दोनों ही परंपराओं में स्तूप की तरह दिखने वाले निर्माण प्रायःकिसी विशेष व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात् उसके शरीर के अंतिम संस्कार के बाद शरीर के अवशेषों को मिट्टी के कलश आदि में रखकर अथवा उसके शरीर के ऊपर अथवा उसकी स्मृति में किए जाते थे। सिंधु घाटी सभ्यता के अन्यतम स्थल गुजरात स्थित धौलावीरा में इस प्रकार के स्तूपनुमा अर्धगोलाकार अवशेष मिले हैं, जो लगभग ईसा-पूर्व 2000 के हैं। विशेष बात यह है कि इन अर्धगोलाकार अवशेषों के उत्खनन के दौरान शवों के अवशेष नहीं मिले हैं। इससे पुरातत्त्वविद यह अनुमान लगाते हैं कि इनका निर्माण किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अथवा शासक की स्मृति में किया गया होगा। इस प्रकार के निर्माण हमें सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य स्थानों पर भी मिलते हैं। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बुद्ध में जन्म से कई शताब्दियों पहले से ही भारत में स्तूपों जैसे दिखने वाले छत्राकार निर्माण प्रचलन में थे और परवर्ती शताब्दियों में बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनके अनुयायियों ने भी उनकी स्मृति में उनके अस्थि अवशेषों पर उसी आकृति के विभिन्न स्तूपों का निर्माण किया।

अब प्रश्न उठता है कि जैनों में स्तूप निर्माण की परंपरा कितनी पुरानी है ? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए जब हम श्वेतांबर परंपरा के ग्रंथों पर दृष्टिपात करते हैं तो पता चलता है कि श्वेतांबर परंपरा में वर्णन

*** अभिषेक कुमार जैन**, साहित्याचार्य, इटारसी, मध्य प्रदेश।

प्राकृत अव्ययों का साहित्यिक प्रयोग

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

डॉ श्वेता जैन*

भाषा शब्दों का संयोजन है। ये शब्द परिवर्तनशील और अपरिवर्तनशील दो प्रकार के होते हैं। परिवर्तनशील शब्दों में लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार परिवर्तन होता है, वहीं अपरिवर्तनशील शब्दों में किसी भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता। जो अपरिवर्तनशील शब्द हैं, उन्हें अव्यय कहा जाता है।

आचार्य पाणिनि अव्यय का लक्षण करते हैं–'चादयोऽसत्त्वे' (1.4.57) जो किसी पदार्थ का वाचक नहीं हो, उसे अव्यय कहा जाता है।

अव्यय के स्वरूप को बताते हुए कहा गया है–

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

अर्थात् लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में व्यय (घटना-बढ़ना) न हो, वह अव्यय है। अव्ययों के प्रयोग प्राकृत भाषा में अनेक रूपों में द्रष्टव्य है।

अव्ययों के भेद एवं उदाहरण

अव्यय पांच प्रकार के होते हैं–1. उपसर्ग 2. क्रिया-विशेषण 3. समुच्चयादि बोधक 4. मनोविकार सूचक 5. अतिरिक्त अव्यय।

1. **उपसर्ग अव्यय**–जो अव्यय क्रिया के पूर्व लगते हैं, वे उपसर्ग अव्यय कहलाते हैं। जैसे–विहरइ, उपहरइ, अणुजाणइ, विकुव्वइ, अहिरोहइ आदि।
2. **क्रिया विशेषण अव्यय**– क्रिया की विशेषता को बतलाने वाले क्रिया विशेषण अव्यय कहलाते हैं। जैसे–अइ, अप्पणो, असइं, अहा, ईसिं आदि।
3. **समुच्चयबोधकादि अव्यय**– कुछ अव्यय दो वाक्यों को मिलाते हैं, कुछ वियोजित करते हैं तो कुछ संकेत, कारण, प्रश्न, काल, विधि और निषेध को बताते हैं, उन्हें समुच्चयबोधकादि अव्यय कहते हैं। इसके सात भेद हैं (1) संयोजक–य, अह, उ (2) वियोजक–वा, किंवा, तु (3)संकेतार्थ–जइ, चेअ, तहावि (4) कारणवाचक–च, तअ, तेण (5) प्रश्नवाचक–अहो, किं, किमुत्त, णु (6) कालवाचक–जाव, ताव, जदा, तदा (7)विधि तथा निषेधार्थक–अङ्ग, आम अद्धा।

---

* **डॉ श्वेता जैन**, डायरेक्टर, आई.एम.बी.ओ, जोधपुर, राजस्थान।

सुनीतिशतकम् की शब्द-संयोजना एवं भाषा तथा काव्य वैशिष्ट्य

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

डॉ आशीष कुमार*

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का दर्पण है। जिसमें भारतीय समाज, संस्कृति, संस्कार एवं परिस्थितियों के अनुरूप सर्वांगीण विचारों का प्रतिबिम्ब स्पष्ट रूप से दिखाई देता। ऐसे अनेक विचारों, नीतियों की दीर्घ श्रृंखला संस्कृत साहित्य में सर्वत्र व्याप्त है, जिनमें वेद, जिनागम, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, सूत्र साहित्य, रामायण, महाभारत, वैदिक एवं जैन पुराण, धर्मशास्त्र कथा साहित्य, उपदेश साहित्य की अन्यान्य प्रवृत्तियां प्रमुख हैं और जिनमें धर्म, दर्शन, शिक्षा, लोकोक्तियां, आभाणक नीतिवचन, सुविचार, सुभाषितों के रूप में नीतिकाव्यों का विकास हुआ है। साहित्यदपर्णकार के शास्त्र के अनुसार नीति का वर्तन होता है।

नीतिः शास्त्रेण वर्तनम्।

वैदिक परंपरा के अनुसार ब्रह्मा जी ने सर्व प्रथम नीतिशास्त्र का प्रणयन किया, उसका ज्ञान मनु ने लिया और नीति काव्य या शास्त्र की परंपरा आगे बढती गई, जो मनु, बृहस्पति, शुक्र, पराशर, विशालाक्ष–परीक्षित–भीम-भीष्म–भारद्वाज,[2] पराशर पुत्र विदुर, चाणक्य आदि नीतिज्ञों तक पहुंची।3

नीतिकाव्य या शास्त्र की परंपरा में कामन्दकीय[4] का नीतिसार, भतृहरि के वैराग्य एवं नीतिशतक, शुक्र का शुक्रनीतिसार, आद्यगुरू शंकराचार्य की शतश्लोकी, सोमदेवसूरि का नीतिवाक्यामृत, आचार्य अमितगति का सुभाषितरत्न संदोह, महाकवि क्षेमेन्द्र का कथाविलास, दर्प दलन, देशोपदेश, सेव्यसेवकोपदेश, आचार्य हेमचन्द्र का योगशास्त्र एवं लघु अर्हन्नीति, जल्हण की सुभाषित मुक्तावली, शिल्हण का शांति शतक, सोमप्रभ का श्रृंगारवैराग्यतरंगिणी, धनदराज का नीतिधनम्, नीलकण्ट दीक्षित का शान्तिविलास एवं वैराग्यशतक आदि ग्रंथों के नाम अग्रगणी हैं।[5]

सुनीतिशतक का प्रतिपाद्यः

शब्द-चिकित्सक महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी के द्वारा रचित संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत काव्यों की परंपरा में ''सुनीतिशतकम्'' नामक शतक काव्यों की परंपरा में मुक्तक काव्य की कोटि का सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ है। इसकी रचना आचार्य श्री ने वीर निर्वाण संवत् 2509 सन् 1983 में ईसुरी बिहार में की थी।

इस काव्य में कुल 107 पद्य हैं जिनमें प्रशस्ति तीन पद्य और चार पद्य मंगलकामना के सूचक हैं। ''सुनीतिशतकम्'' के अधिकांश पद्यों में उपजातिवृत्त[6] है। जिसके 1 से लेकर 97 पद्य तक उपजाति छन्द,

* **डॉ आशीष कुमार जैन**, शिक्षाचार्य, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्यप्रदेश।

पुद्गल द्रव्य की विशिष्ट पर्यायें और उनके वैज्ञानिक प्रयोग

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

डॉ समता जैन*

सारांशिका

जैन दर्शन में 6 द्रव्य–जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल वर्णित हैं। आचार्य अकलङ्क स्वामी तत्त्वार्थ राजवार्तिक में कहते हैं कि–जो पूरण और गलन स्वभाव को प्राप्त होते हैं, उसे पुद्गल कहते हैं। पुद्गल द्रव्य की अनंत पर्यायों में से कुछ विशिष्ट पर्याय शब्द, बंध, सूक्ष्म, स्थूल, संस्थान, भेद, तम, छाया, आतप और उद्योत तथा उनके वैज्ञानिक प्रयोगों की व्याख्या यहाँ प्रस्तुत हैं।

जैन आचार्यों द्वारा पौद्गलिक शक्तियों का उल्लेख तो हजारों वर्ष पूर्व कर दिया गया था। हजारों वर्षों से जैन दर्शन में मौजूद पौद्गलिक शक्तियों के रहस्यों को पहचान कर आज वैज्ञानिकों प्रयोगों द्वारा पेनड्राईव, डाटा कार्ड जैसी आधुनिक वस्तुओं का आविष्कार कर सके है। पुद्गल परमाणुओं में ऐसी शक्ति है कि यदि वे सूक्ष्म रीति से परिणमन करें तो सुई की नोक जितने आकाश क्षेत्र पर अनंतानंत परमाणु समा सकते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि हाइड्रोजन के 25 लाख परमाणुओं के एक सरल रेखा में रखें तो कुल लम्बाई मात्र एक इंच होती है। यह बात आज विज्ञान के आविष्कारों एवं प्रयोगों से प्रत्यक्ष सिद्ध है।

अत: यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं है कि प्राचीन जैन आगमों में पुद्गल तथा पुद्गल की दस पर्यायों के रूप में वर्तमान आविष्कारों के बीज छिपे हुए हैं।

मुख्य शब्द

पुद्गल, द्रव्य, शब्द, बंध, स्कंध, संस्थान, भेद, तम, छाया, आतप, प्रभा-उद्योत।

लोकाकाश सभी द्रव्यों से भरा है, जिसका अस्तित्व है, ही द्रव्य है। आचार्य उमास्वामी के अनुसार **सद् द्रव्य लक्षणम्।**[1] जैन दर्शन में 6 द्रव्य–जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल वर्णित हैं। पुद्गल शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–पुद् + गल।

पुद् का अर्थ है–जुड़ना या मिलना और **गल** का अर्थ है गलना या बिछुड़ना।

आचार्य अकलङ्क स्वामी तत्त्वार्थ राजवार्तिक में कहते हैं कि–**पूरणगलनान्वर्थ-संज्ञत्वात् पुदगला:।**[2] अर्थात् जो पूरण और गलन स्वभाव को प्राप्त होते हैं, पुद्गल कहते हैं। सभी द्रव्यों की अनंत पर्यायें होती हैं। पुद्गल द्रव्य की अनंत पर्यायों में से कुछ विशिष्ट पर्यायों की व्याख्या यहाँ प्रस्तुत हैं।

*** डॉ (ब्र) समता जैन**, ''मरौरा'' विशुद्ध-विनत छाया 44, भाग्य श्री कॉलोनी, विजय नगर, इन्दौर-10 (म.प्र).

Jaina Mysticism and the Mystic Way

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

Dr Kamal Chand Sogani*

Muni's conduct which conforms to the general standard of negating *Hiṁsā* to the last degree. His way of life which is adopted after he has awakened to transcendental consciousness is indicative of the discipline which eliminates all that stands in the way of his progress towards spiritual realisation. It purges away all those superfluous and detrimental elements that dissipate the precious energies of the self, and baulk the revelation of the divine magnificence and beauty. The concept of *Ahiṁsā* follows as a logical consequence of the ontological nature of things. The entire ethical discipline prescribed for the layman and the monk is meant for translating *Ahiṁsā into* practice, the actual realisation of which can only be effected in the plenitude of mystical experience. Thus, if the fountain-head of ethics is metaphysics, mysticism will be its culmination. In other words, if the relationship of ethics to metaphysics is intimate, the relationship of ethics to mysticism is in no way less so. It will not be amiss to point out that ethics is the connecting link between the metaphysical speculation and the mystical realisation. It paves the way from metaphysics to mysticism. The journey from intellect to intuition can only be traversed through the medium of morality.

In view of its potentiality to land us in the domain of spiritualism, by dwelling upon the fourteen stages of spiritual evolution, technically called Gunasthānas, as propounded by the Jaina Ācāryas. In other words, we shall discuss the nature of Jaina mysticism alongwith the mystic way. We may point out in passing that like the mystics of Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam etc. Jaina mystics have made abundant contribution to the mystical literature as such, though unfortunately the well known Encyclopedia of Religion and Ethics[1], does not make mention of Jaina mysticism along with Hindu mysticism, Buddhist mysticism, Muslim mysticism, Christian mysticism etc. So far as I know, it is Dr. A. N. Upadhye who has for the first time discussed, though briefly, the nature of Jaina mysticism.[2] It will not be amiss to point out here that the Jaina Ācāryas have handled this topic quite systematically and in great detail.

---

* **Prof. Kamal Chand Sogani,** Former, Chief Editor, Encyclopedia of Jainism; Director, Jain Vidya Sansthan Samiti, Jaipur; Secretary, Prakrit Bharati Academy, Jaipur; Member, ICPR, New Delhi.

Health Care Measures for Disease Prevention in Naturopathy

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

Rajiv Rastogi*
Surendra Kumar**
Udham Singh***

Abstract

Naturopathy is a natural science of healing and healthy living. It works on the principles of promotion of positive health, prevention of disease, management of disease, and restoration of health. All these four aspects seem to be highly important in today's world where the non-communicable diseases are out numbering the disease from other origin. Naturopathy is basedon the concept of panchamahabhutasor five elements which are Prithvi, Jala, Agni, Vayu, and Akash of which the entire universe including the living body is made up of. Naturopathy believes in the inherent healing potential of body as the force responsible for recovery from illness. Naturopathy has been found effective in the management of lifestyle diseases and shown its important role in COVID19 pandemic too.One of the important aspects of naturopathy is disease prevention means to prevent the disease before its occurrence. Naturopathy system of health care has a group of preventive measures,if followed properly one can minimise the chances of occurrence of illness which ultimately reduce the burden of medication and enhance the life span by adopting a healthy lifestyle.

Key Words

Preventivemeasures, Naturopathy, Ayush, Drugless Science, Healing.

---

* **Rajiv Rastogi,** Visiting Professor Cum Faculty Member and Research Advisor (Y&N) School of Allied Health Sciences for AYUSH, Khongnangthaba University, Manipur.

** **Surendra Kumar,** Head, Dept, of Yogic Science, Dean, Faculty of Yoga and Physical Education Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

*** **Udham Singh,** Assistant Professor, Dept. of Yogic Science, Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar.

Tantra: The Living Tradition of Mithila

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

Dr Bindu Chauhan*

Abstract

In this paper I intend to weave together the heritage of Indian Tantra philosophy and its relation to the Iconographic images of Mithila Art and Culture. Mithila (also known as Videha) has been for ages a centre of intellectual and artistic capital, where developed some of the most subtle forms of logical analysis that the world has known. The combination of intellectual subtlety and artistic sensitiveness makes it a seat of importance. The paper attempts to find out (i) The traces of Tantra and *tāntrikas* in Mithila and (ii) The continuity in the cultural tradition (*Paramparā*) between the past and the present which still makes it a 'Living Tradition.'

Key Words

Tantra,Tāntrika, Tantric Imagery, Iconography, Aripana.

Religion in its widest sense includes on the one hand the conception which men entertain of the divine or supernatural powers and on the other, the sense of the dependence of human welfare on those powers which finds its expression in various forms and structure of worship. Tantra has developed as a system of thought which makes us see the universe as if it were within ourselves, and ourselves as if we were within the universe. The Tantra means the individual being and the universal being are one. Thus what's all exists in the universe also exists in the individual body. The word Tantra is used in many senses. In epithets like '*Sarvatantrasvatantra*' it means *Śāstra* in general. Shankaracharya on his bhāṣya on *Brahmasūtra* uses it in the sense of Sāṅkhyaśāstra. Tantra is also a synonym of Agama; they are considered sixty-four in numbers.[1] Likewise Vedas;Tantra is also regarded as having a divine origin. Being sixty-four in number the Tantra is divided mainly into four parts: *Jñāna, Kriyā,*

* **Dr Bindu Chauhan,** Assistant Professor, Dept. of Hindi, C.M. College, LNMU.

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

Jainism and Sartrean Existentialism: A Comparative Study on the Concept of Being and Existence

Md Zizaur Rahaman*

Mostafijur Rahaman**

Abstract

Although there are significant differences between Jainism and existentialism in their conception of the ultimate aim of the human, the two ideologies share numerous themes. We are interested in examining the connections between atheism, subjectivity, and responsibility as common notions across the two schools of thought. This paper aims to attract attention to Jainism's deep intellectual origins, which have yet to receive much attention in the West. South Asian thinking has been largely overlooked in discussions on interpreting one's place in society. A prejudice against its historicity and periodization exists even when Eastern religious thinking is recognised or addressed. Because of its outmoded character, some Western researchers despise Oriental philosophy. In our observation, the humanist philosophy of the Jain religion has the most affinity with Sartre's Existentialism. The ideas that highlight humanity are those that most fascinate me. In our paper, we shall thus dissect both ideologies' atheism, subjectivity, freedom, and responsibility ideas. We aim to show how these ideas aid in our comprehension of humanistic principles. We shall also discuss fundamental ideas on the soul, the body, and consciousness, even if these are the overall conceptual parallels. This examination shall provide the groundwork for a strategy for appreciating and re-evaluating South Asian philosophy's contribution to the development of notions that Western philosophy introduced decades later.

Key Words

Existentialism, Jainism, Being, Atman, Self.

* **Md Zizaur Rahaman,** Research Scholar, Department of Philosophy Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University Srinagar Uttarakhand.

** **Mostafijaur Rahaman,** Research Scholar, Department of English Aligarh Muslim University Aligarh Uttar Pradesh.

Color-Myth: Indian Mythological Colors and Semiotic Deconstruction of Color Signs in Indian Mythological Cartoon Movie *Little Krishna*

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

Shubhjit Chowdhury*

Abstract

India is known in the entire world for its diversity in population and culture so proportionately there is diversity in colors in Indian society, and diversity in the society's age-old beliefs on these colors.There are age old beliefs in various Indian mythological narratives, where deities with their noble activities for the aid of humanity gave characteristics to these colors; due to which in present scenario for the devotees the color itself speaks to them for the deity. In Indian culture color carries traditional values translated from one generation to another; and in this post-modern age of technology, there is a juxtaposition of theseage-old values and contemporary technology, while circulating the values of Indian culture to the young generation; and various Indian mythological cartoon movies for the younger audience is the fruitful result of this juxtaposition. Indian culture is symbolic in nature, hence the mythological cartoons based on it. So, the objective of this article will be to decode the semiotic decoding of color alignments in these cartoon movies, by associating the color codes with mythological narratives; to construct a meaningful sign out of these Indian mythological cartoon movies. This article will juxtapose the discourse of modern color theory of graphics designing and age-old discourse of Indian mythology while analyzing those cartoon movies.

Key Words

Color Theory, Semiology, Cultural Studies, Animation Studies, Cartooning, Mythology.

* **Shubhajit Chowdhury,** Scholar, Affiliated: Birnghana Sati Sadhani Rajyik Vishwabidyalayam, Golaghat, Assam.

जैन दर्शन में वादविद्या एवं वादविधि

Tulsī Prajñā
50 (200)
Oct-Dec, 2023
ISSN : 0974-8857

डॉ धर्मचन्द जैन*

तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के लिए प्राचीन काल से ही वाद का महत्त्व रहा है। चरकसंहिता एवं न्यायसूत्र में वाद की महती चर्चा उपलब्ध होती है, किन्तु बौद्ध त्रिपिटकों एवं जैन आगमों में वाद का प्रयोगात्मक स्वरूप दृग्गोचर होता है। असंग एवं वसुबन्धु के वादविधि आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त बौद्धदर्शन में उपायहृदय एवं तर्कशास्त्र[1] का भी वादविद्या की दृष्टि से महत्त्वपूर्णस्थान है। इन ग्रन्थों में हमें वादविद्या के प्राचीन स्वरूप के दर्शन होते हैं। जैनदर्शन के अनेक दार्शनिक ग्रन्थों में भी वादविद्या का प्रयोग उपलब्ध होता है। अन्य दर्शनों के पूर्व पक्ष को उपस्थापित कर उनका खण्डन करने में भी यह विद्या प्रयुक्त हुई है। मौखिक रूप से भी सभा में वादविद्या खूब प्रचलित रही है। कई जैन दार्शनिक वादविद्या में निपुण रहे हैं, जिनमें मल्लवादी क्षमाश्रमण, वादिराज, वादीभसिंह, वादिदेवसूरि आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मल्लवादी क्षमाश्रमण ने 5वीं शताब्दी में बौद्ध दार्शनिक बुद्धानन्द को वाद में पराजित किया था।[2] उन्होंने द्वादशारनयचक्र नामक ग्रन्थ में पूर्व-पूर्व दर्शनों का उत्तरवर्ती दर्शनों के द्वारा खण्डन प्रस्तुत कर वादविद्या का अद्भुत परिचय दिया है।

आगम-साहित्य में वादविद्या

जैन आगमों में अनेक वाद एवं संवाद प्राप्त होते हैं, जिनसे प्रश्नकर्ता को तत्त्व का बोध हुआ है। इस सम्बन्ध में सूत्रकृतांग में पार्श्वानुयायी उदकपेढालपुत्त का भगवान महावीर के शिष्य गौतम के साथ तथा आर्य अद्द का अनेक मतवादियों के साथ हुआ वाद उल्लेखनीय है।[3] उपासकदशांग सूत्र में सद्दालपुत्त का भगवान महावीर के साथ[4], राजप्रश्नीय सूत्र में राजा प्रदेशी का केशीश्रमण के साथ[5], व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र में स्कन्धक, जमालि, रेवती आदि का भगवान महावीर के साथ, उत्तराध्ययन सूत्र में पार्श्वपरम्परा के केशी श्रमण एवं गणधर गौतम के साथ[6] हुए वाद भी इसी प्रकार उल्लेखनीय हैं। जिनभद्रगणि विरचित विशेषावश्यकभाष्य में भगवान महावीर की सन्निधि में आए इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्तस्वामी, सुधर्मास्वामी आदि एकादश ब्राह्मण विद्वानों के साथ हुए वाद का निरूपण प्राप्त होता है, जिसे गणधरवाद के नाम से जाना जाता है। इन वादों में जीव, कर्म,तज्जीव-तच्छरीर, बन्ध-मोक्ष आदि के सम्बन्ध में नवीन प्रकाश प्राप्त होता है, जिससे वादकुशल इन्द्रभूति गौतम आदि ब्राह्मणों में प्रथम पाँच ने अपने पाँच सौ पाँच शिष्यों के साथ, तीन-तीन ब्राह्मण विद्वानों ने अपने 350 एवं 300 शिष्यों के साथ भगवान महावीर के पास प्रव्रज्या पथ अंगीकार किया।[7] इस प्रकार गुरु एवं जिज्ञासुओं या शिष्यके बीच होने वाला वाद तत्त्वज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी रहा। इसे न्यायदर्शन में वीतराग कथा कहा गया। वादनिपुण व्यक्तियों

---

* **डॉ. धर्मचन्द जैन**, पूर्व आचार्य संस्कृत-विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ)

Guideline for Writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: postal address, email ID and Contact Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script:
   - Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
   - Font Type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
   - Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
   - Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
   - Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
   - Reference Type: MLA (8th edition)

     Link up for more help: http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/ for examples: for journals and books respectively

     Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.

     Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.
   - Reference Style : End note
   - Alignment: Justify
   - Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis: in double inverted commas.
   - For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.

RAJ HIN 28340/75

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor
BOOKS		
01.	जैव-प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़
02.	जैन न्याय परिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री
03.	जैन संस्कृति और जीवन मूल्य	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा
04.	आचार्य श्री महाप्रज्ञ कृत तुलसी मंजरी (पूर्वाद्ध एवं उत्तराद्ध)	डॉ. साध्वी अक्षयप्रज्ञा
05.	भिक्षु न्यायकर्णिका	पं. विश्वनाथ मिश्र
06.	जैन इतिहास एवं संस्कृति (प्रथम एवं तृतीय भाग)	समणी ऋजु प्रज्ञा
07.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन
08.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा
09.	आचार्य महाश्रमण विविध आयामी अवदान	प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी
10.	विकास : गांधी एवं आचार्य महाप्रज्ञ दृष्टि	डॉ. लिपि जैन
11.	भारतीय लोकतंत्र एवं राजनीति	डॉ. लिपि जैन
12.	भगवती आराधना (मूलाराधना)	डॉ. दलपतसिंह बाया
13.	Jain Studies & Science	Profesor (Dr.) M.R. Gelra
14.	Bibliography of Jain Text in Tamil	Shri. K.P. Aravaanan
15.	Jainism: An Existential Humanistic Perspective	Dr. Samani Agam Prajna
16.	Contribution of Acarya Mahaprajna to Indian Culture	Professor (Dr.) Dayanand Bhargava
17.	Studies in Jaina Agamas	Proefessor Dayanand Bhargav
18.	Bibliography of Jaina Literature	Dr. Samani Aagam Prajna
19.	Dimension of Jain Philosophy and Indian Culture	Ed. Dr. Samani Sulabh Prajna, Prof. Samani Riju Prajna, Prof. B.L. Jain Samani Samyaktva Pragya
20.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra
21.	Conflict Resolution and Peace Technology	Dr. Lipi Jain
22.	Jainism in Modern Perspective (An Enquiry into the Relevance of Jainism in the Modern Context of the World)	Samani Dr. Chaitanya Prajna Prof. Samari Kanta Samanta
23.	Psycho-Social & Psycho-Biological Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness and Academic Performance of School Children	Prof. Viney Jain
MONOGRAPH SERIES		
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha
14.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha
15.	Political Thought of Jainism	Naresh Dadhich
16.	The Notion of Soul (Aatma) in Jainism	Dr. Samani Rohini Pragya

सम्पादक; प्रकाशक - जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं; मुद्रक - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर (राजस्थान)